बालकों के गीत

टैक्स्ट बुक कमेटी दिल्ली के पत्र सं०टी०बी०सी०/८०० दिनांक १३-६-५५ द्वारा दिल्ली राज्य के स्कूलों की तीसरी कक्षा के लिए स्वीकृत पुस्तक।

बालकों के गीत

[बालोपयोगी सरस कविताएँ]

सम्पादक

सन्तराम वत्स्य

नेशनल पब्लिशिंग हाउस

९६ दरियागंज, दिल्ली

चौथा संस्करण
१६६०

मूल्य
आठ आने

मुद्रक
बालकृष्ण, एम० ए०
युगान्तर प्रेस, डफ़रिन पुल, दिल्ली

सूची

१. प्रार्थना	...	...	५
२. भारत देश हमारा प्यारा	...	...	६
३. मार्च-संगीत	...	...	८
४. सीखो	...	...	१०
५. माता	...	...	१२
६. पाँच काम	...	...	१४
७. होनहार	...	...	१६
८. परछाईं	...	...	१८
९. अच्छे बनो	...	...	२०
१०. मीठी बोली	...	...	२१
११. फूलों का राजा	...	...	२२
१२. कोकिल	...	...	२४
१३. बड़ी चीज़ है हँसना	...	...	२५
१४. तितली	...	...	२६
१५. झरना	...	...	२७
१६. आज आज़ादी का त्योहार	...	...	२९
१७. नदी	...	...	३०
१८. बादल	...	...	३१

१९. वर्षा-काल ३२
२०. नटखट बन्दर ३५
२१. तारे ३८
२२. बोलियाँ ३९
२३. गधे की दौड़ ४०
२४. सड़क ४३
२५. मूर्ख कुत्ता ४४
२६. जैसे को तैसा ४६

प्रार्थना

हम बालक हैं ईश्वर तेरे।
याद करें नित साँझ-सवेरे॥

तू ही पिता कहाता है।
तू ही सब का दाता है॥

तूने सूरज-चाँद बनाए।
तूने ही तारे चमकाए॥

तू ही जल बरसाता है।
तू ही सब का दाता है॥

तूने यह आकाश बनाया।
फल-फूलों का साज सजाया॥

तेरे जग गुण गाता है।
तू ही सब का दाता है॥

सच्चे बालक बन जाएँ हम।
तेरे ही गुण नित गाएँ हम॥

तू ही सब की माता है।
तू ही सब का दाता है॥

भारत देश हमारा प्यारा

भारत देश हमारा प्यारा।
है दुनिया से न्यारा॥

नदियाँ और पहाड़ यहाँ हैं।
बड़े-बड़े मैदान यहाँ हैं॥
सूरज-तारे-चाँद यहाँ हैं।
पतझड़ और बहार यहाँ हैं॥

है भारत आँखों का तारा।
भारत देश हमारा प्यारा॥

जिसका अन्न सदा हम खाते।
फूल और फल जिससे पाते॥
जिसके झरनों का जल पीते।
जिसकी वायु में हम जीते॥

वही हमारा एक सहारा।
भारत देश हमारा प्यारा॥

पुत्र-पुत्रियां हम भारत के।
नर-नारी सब मिल भारत के।।
इसकी शान बढ़ाएँगे हम।
इसका मान बढ़ाएँगे हम।।

हमने सब-कुछ इस पर वारा।
भारत देश हमारा प्यारा।।

★

मार्ग-संगीत

जल्दी-जल्दी आओ भाई।
हिन्दू-मुसलिम-सिख-ईसाई ॥
दुश्मन पर हम करें चढ़ाई।
जाकर उससे लड़ें लड़ाई ॥
बाएँ-दाएँ, बाएं-दाएँ ।
बाएँ-दाएँ, बाएँ-दाएँ ॥

हममें से इक ढोल बजाए,
एक बिगुल को मुँह से लगाए ।।
झंडा इक कंधे पै उठाए ।
झंडे वाला आगे आए ।।

बाएँ-दाएँ, बाएँ-दाएँ ।
बाएँ-दाएँ, बाएँ-दाएँ ।।

हम सब एक कतार में आएँ ।
औ' कप्तान का हुक्म बजाएँ ।।
जल्दी-जल्दी पाँव उठाएँ ।
ढम-ढम-ढम-ढम ढोल बजाएँ ।।

बाएँ-दाएँ, बाएँ-दाएँ ।
बाएँ-दाएँ, बाएँ-दाएँ ।।

भारत-माँ की सेवा सीखें ।
कदम को आगे धरना सीखें ।।
उज्वल हो कर रहना सीखें ।
औ' न किसी से डरना सीखें ।।

बाएँ-दाएँ, बाएँ-दाएँ ।
बाएँ-दाएँ, बाएँ-दाएँ ।।

सीखो

फूलों से नित हँसना सीखो,
भौंरों से नित गाना।
तरु की झुकी डालियों से नित,
सीखो शीश झुकाना॥
सीख हवा के झोंकों से लो,
कोमल भाव बहाना।
दूध तथा पानी से सीखो,
मिलना और मिलाना॥
सूरज की किरणों से सीखो,
जगना और जगाना।
लता तथा पेड़ों से सीखो,
सबको गले लगाना॥
वर्षा की बूंदों से सीखो,
सबसे प्रेम बढ़ाना।
मेंहदी से सीखो सब ही पर,
अपना रंग चढ़ाना॥

मछली से सीखो स्वदेश
के लिए प्रेम नित करना।
पतझड़ के पेड़ों से सीखो,
दुख में धीरज धरना॥
दीपक से सीखो जितना हो-
सके अँधेरा हरना।
पृथ्वी से सीखो प्राणी की,
सच्ची सेवा करना॥
जल-धारा से सीखो आगे,
जीवन-पथ में बढ़ना।
और धुएँ से सीखो हरदम,
ऊँचे ही पर चढ़ना॥
सत्पुरुषों के जीवन से,
सीखो चरित्र निज गढ़ना।
अपने गुरु से सीखो बच्चो !
उत्तम विद्या पढ़ना॥

*

माता

[१]

किसने तुमको पाला-पोसा,
किसने तुम्हें खिलाया।
बड़े प्यार से किसने तुमको,
अपना दूध पिलाया॥

[२]

गिना तुम्हारे दुःख को किसने,
अपने दुःख से बढ़कर।
उमग-उमग पड़ते थे किसके,
कन्धों पर तुम चढ़कर॥

[३]

किसकी मीठी बातें सुन तुम,
फूले नहीं समाते।
किसकी उँगली पकड़-पकड़ चल,
तुम हँसते - मुस्काते॥

[४]

जिसका मुखड़ा देख तुम्हें है
सारा सुख मिल जाता।
वह माता है, स्वर्ग न जिसकी
पद-रज को है पाता॥

★

पाँच काम

पाँच काम नित करना

[१]

साँझ सवेरे बड़े प्रेम से
ईश्वर को तुम भजना।
जो है जग का कर्त्ता उसका
सुमरिन कभी न तजना॥

[२]

सब अंगों को स्वच्छ बनाकर,
स्वच्छ वसन तन धरना।
स्वच्छ जगह में रहना, भोजन-
आदि स्वच्छ ही करना॥

[३]

उछल-कूद या कुश्ती लड़ना,
अथवा दूर टहलना।
किसी तरह की कसरत
निश्चय करना, नहीं बिचलना॥

[४]

भली भाँति निज पाठ याद कर,
तब आगे को बढ़ना।
जब तक होवे, खूब समझकर,
ध्यान लगाकर पढ़ना॥

[५]

गुरु-माँ-बाप बड़ों की सेवा,
करना जो कर सकना।
उनकी आज्ञा पालन में तुम,
बालक नहीं हिचकना॥

★

होनहार

समय जो व्यर्थ न खोते हैं।
बात के पक्के होते हैं॥
फूट का बीज न बोते हैं।
प्रेम के बहते सोते हैं॥

काम कर समय बिताते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

बुराई से रहते जो दूर।
भलाई से रहते भरपूर॥
मानते अपना किया कसूर।
सत्य को कभी न करते चूर॥

बात कर उसे निभाते है।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

न जो नित खेला करते हैं।
ध्यान पढ़ने में धरते हैं॥
दुःख दुःखियों का हरते हैं।
सदा पापों से डरते हैं॥

न बढ़-बढ़ बात बनाते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

बड़ों का जो करते हैं मान।
न छोटों का करते अपमान॥
सादगी ही है जिनकी शान।
सदा करते ईश्वर गुण-गान॥

गुणों को जो अपनाते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

दूसरों का न बुरा तकते।
न जो पागल से हैं बकते॥
काम से जल्द न जो थकते।
भला औरों का कर सकते॥

नम्र बन हृदय चुराते हैं।
वही कुछ कर दिखलाते हैं॥

★

परछाईं

मेरे-जैसे हाथ-पैर हैं,
मेरी-जैसी धोती ।
मेरे-जैसा कुरता पहने,
मेरी-जैसी टोपी ॥

मैं बैठूं तो वह भी बैठे,
मैं खेलूं तो खेले।
मैं कौवे को ढेला मारूँ,
वह भी मारे ढेले ॥

लम्बा-लम्बा साँझ-सवेरे,
छोटा-सा दुपहर को।
नहीं छोड़ता है यह मुझको,
सारे दिन पल-भर को ॥

यह मेरा प्यारा भाई है,
मैं हूँ इसका भाई।
माँ से पूछा, नाम बताओ,
वह बोली, परछाईं ॥

★

अच्छे बनो

चमको, जैसे नभ-मण्डल में,
तारे खूब चमकते।
महको, जैसे फुलवारी में,
सुन्दर फूल महकते॥
मीठे बोल सभी से बोलो,
जैसे कोयल बोले।
बात-बात में जैसे तोता,
मिसरी-सा रस घोले॥
साफ रहो तुम दर्पण-जैसे,
मैल न मन में लाओ।
सागर-से गम्भीर बनो तुम,
किरणों-से मुसकाओ॥
जीवन अमर नहीं है प्यारे,
नाम अमर कर जाओ।
अच्छे कामों से तुम जग में,
सबका चित्त चुराओ॥

मीठी बोली

जब अपना मुंह खोलो तुम ।
मीठी बोली बोलो तुम ॥
जग में आदर पाओगे ।
तुम अच्छे कहलाओगे ॥

कोयल मीठा गाती है ।
सबका जी बहलाती है ॥
तोता सबको भाता है ।
मीठी बात सुनाता है ॥

सच्चा गुर यह जानो तुम ।
बात हमारी मानो तुम ॥
जब अपना मुख खोलो तुम ।
मीठी बोली बोलो तुम ॥

मीठे शब्द सुनाओ सबको ।
मीठे गान सुनाओ सबको ॥
जहाँ कहीं भी जाओ तुम ।
मीठी बोली बोलो तुम ॥

फूलों का राजा

है गुलाब फूलों का राजा,
यह है बड़ा सजीला।
राजा की है शान निराली,
सुन्दर बड़ा रंगीला।
उजला कभी-कभी दिखलाता–
लाल, गुलाबी, पीला॥

बन जाती इसके खिलने से,
रंग - बिरंगी क्यारी।
फूली नहीं समाती, फूले
फूलों से फुलवारी ॥
कांटों में रहकर भी इसको,
हरदम हँसना भाता।
सबको खुश रहने का है यह,
हरदम पाठ पढ़ाता ॥

★

कोकिल

कोकिल अति सुन्दर चिड़िया है।
सब कहते यह अति बढ़िया है॥

जिस रंगत के कुँवर कन्हाई।
उसने भी वह रंगत पाई॥

अथवा जामुन का रंग जैसे।
इसका भी होता है तैसे॥

ज्यों ही चैत मास लगता है।
जाड़ा अपने घर भगता है॥

त्यों ही वह अति मीठी बानी।
नित्य बोलती है रस-सानी॥

आम बौर इसको अति प्यारा।
सत्य-सत्य यह वचन हमारा॥

बौरों के सुगन्ध की माती।
कुहू-कुहू यह सब दिन गाती॥

बड़ी चीज़ है हँसना

हँसो जरूर हंसाओ सबको,
बड़ी चीज है हंसना ।

पर-ऐबों पर हंसना समझो,
पाप-पंक में फंसना ।।

हंस-हंस कली फूल बन जाती,
तुम भी हंस-खिल जाओ ।

कली-समान सुगन्ध उड़ाकर,
सबका मन हर्षाओ ।।

हंस-हंस चन्दा पूरा होकर,
हर लेता अंधियारा ।

तुम भी हंस-हंस पूरे होकर,
कर दो जग-उजियारा ।।

★

तितली

मेरी छोटी प्यारी तितली !
उड़ती फिरती हो क्यों इकली ।।
रंग-बिरंगे पंख तुम्हारे ।
फूलों-से लगते हैं प्यारे ।।

डाल-डाल पर उड़ती फिरती ।
न जाने किस धुन में रहती ।।
अपना भेद न कुछ बतलाती ।
कहाँ-कहाँ हो आती-जाती ।।

छिन-भर भी नहीं कभी गंवाती ।
करना काम हमें सिखलाती ।।
समझ गया बस सारा मतलब ।
'करना काम' हमारा करतब ।।

★

झरना

ठहरो, क्यों भागे जाते हो।
कहाँ पास किसके जाते हो ?
अपनी झर-झर तान सुनाते।
पथिकों को निज नीर पिलाते।
पथ में नहीं ठहरने पाते।
लिये संदेशा किसका जाते ?

बाधाएँ कितनी आती हैं।
तुमको रोक नहीं पाती हैं॥
बाधाओं से भिड़-भिड़ जाना।
हटना नहीं, नहीं भय खाना॥

★

आज आज़ादी का त्योहार

बज रहे बाजे चारों ओर।
उठा है विजय-गीत का शोर॥
घूमते हैं हर तरफ जलूस,
गुंजा कर नारों की जयकार!
आज आज़ादी का त्योहार॥

सजे मन्दिर-मस्जिद - मीनार।
सजे झोंपड़ी-महल-गृह - द्वार॥
झूमते दरवाजों पर लहर-
लहर झण्डों के बन्दनवार!
आज आज़ादी का त्योहार॥

मची है गली-गली में धूम।
रहा जन-जन मस्ती से झूम॥
गले मिल हिन्दुस्तानी आज,
कर रहे हैं आपस में प्यार!
आज आज़ादी का त्योहार॥

नदी

कुछ तो बतला दो तुम हमको,
नदी कहाँ से आती हो ?
यह पानी का ढेर और यह,
लहर कहाँ से लाती हो ॥
नदी, तुम्हारी चाल हमारी,
नहीं समझ में आती है ।
उथली कहीं, कहीं हो गहरी,
सँकरी चौड़ी छाती है ॥
खेती सबकी सींच-सींचकर,
पैदावार बढ़ाती हो ।
इधर-उधर तुम खेल-कूदकर,
कल-कल शब्द सुनाती हो ॥
कभी-कभी तुम गांव बहाकर,
हाहाकार मचाती हो ।
बतलाओ तो इसका मतलब,
इतनी क्यों शरमाती हो ॥

बादल

बादल, बादल, बरसो पानी ।
आज नहाएँगे मनमानी ॥

रिमझिम बरसो ।
झम-झम बरसो ॥

धीरे-धीरे ।
थम-थम बरसो ॥

जिससे हो न हमें हैरानी ।
बादल, बादल बरसो पानी ॥

ठण्डा-ठण्डा ।
तन हो मेरा ॥

ठण्डा-ठण्डा ।
मन हो मेरा ॥

मर जाए गर्मी की नानी ।
बादल, बादल बरसो पानी ॥

वर्षा-काल

आया अब यह वर्षा-काल ।
जग का हुआ और ही हाल ।।
नहीं कहीं अब हाहाकार ।
गर्मी से न व्यथित संसार ।।
नहीं लू अब सन-सन चलती ।
अब न आग-सी धरती जलती ।।

'प्यास-प्यास', 'पानी-पानी' नर ।
चिल्लाते अब नहीं कहीं पर ।।

अब न कहीं पर उड़ती धूल ।
मुरझाते न लता-तरु-फूल ।।

रहा न रवि-किरणों का त्रास ।
घिरा बादलों से आकाश ।।

बरस रहा जल चारों ओर ।
मेंढ़क सुख से करते शोर ।।

कहीं पपीहा करता शोर ।
कहीं नाचते प्रमुदित मोर ।।

पृथ्वी, खेत, बाग, वन, तरुवर ।
हरे-हरे दिखलाते सुन्दर ।।

वीर बहूटी की छवि न्यारी ।।
आँखों को लगती अति प्यारी ।।

शीतल पवन वेग से बहता ।
छिपा बादलों में रवि रहता ।।

झड़ी रात-दिन की लग जाती ।
दिन की रजनी हो-हो जाती ।।

बिजली चमक-चमक रह जाती।
झिल्ली है झंकार मचाती॥
पृथ्वी की हरियाली सुन्दर।
लगती कैसी भली मनोहर॥
चला रहे हल कहीं किसान।
कहीं मग्न हो बोते धान॥
कहीं प्रेम से मेंड़ उठाते।
बैल-गाय हैं कहीं चराते॥
झूले पड़े हुए हैं घर-घर।
अति प्रफुल्ल मन हैं नारी-नर॥
ललना झूल-झूल सुख पातीं।
कजरी और मल्हार सुनातीं॥
हरी-भरी अतिशय सुखकारी।
वर्षा ऋतु सब को है प्यारी॥
कृषि पर निर्भर देश हमारा।
हमें इसी से पावस प्यारा॥

★

नटखट बन्दर

आज सुनाऊं तुमको बच्चो,
मैं बन्दर की एक कहानी।
जिसको अपनी चंचलता पर,
पड़ी अंत में जान गँवानी॥

एक सेठ पूजा करने को,
सुन्दर मन्दिर बनवाता था।

कारीगर मजदूरों से वह,
सब कामों को करवाता था ॥

बढ़ई बनाने दरवाजे को,
भारी फट्टा चीर रहे थे।
और पेड़ पर बैठे बन्दर,
सारी चीजें देख रहे थे ॥

दूर गए वे रोटी खाने,
सब पेड़ों से नीचे आए।
पकड़-पकड़ कर औजारों को,
लाला फूले नहीं समाए ॥

और एक ने उस फट्टे पर,
आकर अपना राज्य जमाया।
कील लगी क्यों इसके अन्दर,
समझ नहीं वह इसको पाया ॥

लगा कील को और हिलाने,
धुन पर जो अपनी लटकाया।
कील उठी लकड़ी के अन्दर,
बन्दर का धड़ सब पिचकाया ॥

खूब जोर से वह चिल्लाया,
किन्तु नहीं था कोई इलाज।

कहाँ चला था पण्डित बनने,
पहुंच गया पर यम के राज ।।

बच्चो, अपना काम करो तुम,
सदा सुखी प्रिय बन जाओगे।
अगर करोगे तुम शैतानी,
बन्दर - जैसे पछताओगे ।।

★

तारे

जगमग-जगमग ज्योति जगाते,
चमक रहे हैं नभ में तारे।
हीरे मोती से बिखरे थे,
लटक रहे हैं बिना सहारे॥
भारत माता की चादर में,
टँके हुए हैं चाँद-सितारे।
या ईश्वर की फुलवारी के,
ये पावन प्रसून हैं प्यारे॥
ऐसा भी प्रतीत होता है,
आज स्वर्ग में हुई दीवाली।
रख हुए हैं दीपक मानो,
'लखन' ज्योतिमय प्रभा निराली॥
खेल रहे हैं आँख मिचौनी,
हँसते और हँसाते सारे।
जीवन का रहस्य बतलाते,
मनमोहक-से बनकर प्यारे॥

बोलियाँ

वर्षा हुई घटाएं छाईं।
गाएं 'रंभा-रंभा' कर आईं ।।

कुत्ते भौंके शेर दहाड़े।
जंगल में हाथी चिघाड़े ।।

बादल आए गरज-गरज कर।
रोए पपीहा 'पिऊ-पिऊ' कर ।।

चौंके हिरन छलांगें भरते।
गीदड़ 'हुआ-हुआ' हैं करते ।।

मुर्गों ने दी बांग सवेरे।
जागो-जागो बच्चे मेरे ।।

चिड़ियां चहक-चहक उड़ जातीं।
बकरी खड़ी-खड़ी मिमियातीं ।।

तोते 'राम-राम' रटते हैं।
कौवे कांव-कांव करते हैं ।।

'कुहू-कुहू' कोयल की बोली।
मीठी मानो मिसरी घोली।

गधे की दौड़

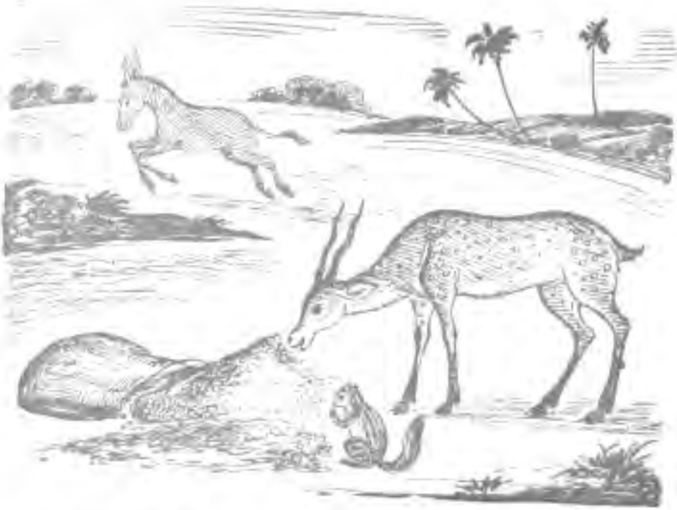

गधा एक जंगल में रहता,
वह कुछ भी न करता काम।
खाना-पीना और सो जाना;
दौड़ लगाना उसका काम ॥

लगा समझने वह अपने को,
दौड़ लगाने में होशियार।

आकर बैल से बोला यों वह,
"आओ दौड़ लगाएँ यार।"

"मैं बूढ़ा हूँ भाग न सकता,
जाओ तुम बकरी के पास।"
'में-में' करती बकरी बोली,
"मत राखो तुम मुझसे आस॥"

"मेंढ़क तुम पानी के राजा,
आओ मिलकर दौड़ लगाएँ।
बूढे बैल और बकरी को,
हम-तुम अभी लजाएँ॥"

'टर्र-टर्र' यों मेंढक बोला,
"मैं छोटा तुम बहुत बड़े।
देख लगाते दौड़ हमें सब,
लोग हँसेंगे खड़े-खड़े॥"

"फूफा हरिण, सुनो आज तुम,
मेरी दौड़ कहानी।
मैंने कहा दौड़ने को तो,
मरी सभी की नानी॥"

बैल बेचारा क्या दौड़ेगा ?
बकरी ने भी छोड़ी आस।

'टर्र-टर्र' मेंढक टर्राया,
अब आया मैं तेरे पास।"

हँसा हरिण सुन बात गधे की,
बोला, "क्या कुछ मिले इनाम ?
हार-जीत का करे फैसला,
मुझे बताओ उसका नाम।"

"जो जीतेगा, उसे मिलेगा,
यह अनाज का बोरा।
नाम गिलहरी उसका लेगी,
यह जीता वह हारा॥"

लगा दौड़, कर 'ढेंचू-ढेंचू',
गधा दूर को भागा।
हरिण गिलहरी ने यह सोचा,
भाग हमारा जागा॥

दोनों ने अनाज मिल खाया,
बोरी कर दी खाली।
गधा लौटकर जब आया,
तो हँसते दे-दे ताली॥

*

सड़क

सड़क कहाँ से तू आती है,
और कहाँ को तू जाती है ?

कितना लम्बा है तेरा तन,
देखे कितने हैं पहाड़ बन ?

देखे कितने नगर निराले,
पार किये कितने नद-नाले ?

तुझ पर कितने खेले लड़के,
कितने तूने देखे मेले ?

कौन-कौन राजे-महाराजे,
तुझ पर चले बजाकर बाजे ?

कितने तुझ पर फिरे भिखारी,
भूखे-प्यासे बिना सवारी ?

टुक हम को बतला दे प्यारी,
कहाँ बसें कैसे नर-नारी ?

सड़क रहेगी सदा पड़ी क्या,
हो सकती तू नहीं खड़ी क्या ?

मूर्ख कुत्ता

सुनो सुनाता एक कहानी।
कुत्ते ने की क्या नादानी॥
टुकड़ा रोटी का एक पाकर।
नदी-तीर पर पहुँचा जाकर॥

जल में अपनी छाया देखी।
भूल गया वह सारी शेखी॥

समझ दूसरा कुत्ता उसको ।
आता लिये एक रोटी को ॥

समझा अपने मन में उसने ।
आता मेरी रोटी लेने ॥
सोचा इसको मार भगाऊँ ।
फिर सुख से मैं रोटी खाऊँ ॥

लगा भौंकने आ शेखी में ।
टुकड़ा मुँह से गिरा नदी में ॥
बिना बिचारे जो करते हैं ।
वे ऐसा ही फल चखते हैं ॥

★

जैसे को तैसा

[१]

एक बार गड़ गया सिंह के पंजे में कांटा भारी।
जिससे वह बीमार पड़ गया, हुई शिथिल काया सारी॥
देख सिंह को दुःखी, थे मन में हर्षित यद्यपि जीव सभी।
तो भी दिखलाने को जाते, उसे देखने कभी-कभी॥
सिवा लोमड़ी के उससे मिलने को सारे जाते थे।
मुँह देखी बातें कर-करके उसका जी बहलाते थे॥

उनमें एक भेड़िया भी था चुगलखोर चालाक।
सदा खैरख्वाही दिखलाता बोला मौका ताक ॥

(२)

"महाराज के दर्शन लेने सारी प्रजा यहां आती।
पर घमंड में भरी लोमड़ी, कभी नहीं मुंह दिखलाती।"
सुनकर क्रोधित हुआ सिंह, यों बोला "देखा जाएगा–
जो जैसा आचरण करेगा, वह वैसा फल पाएगा।"
सुना भेड़िये ने जब ऐसा, मन में हुआ प्रसन्न बड़ा।
चुगली खाने लगा और भी, हाथ जोड़कर खड़ा-खड़ा ॥
वहीं लोमड़ी के साथी ने सुन पाई यह बात।
उसी समय जाकर कह दी, उसने की थी जो बात ॥

(३)

चतुर लोमड़ी यह सुनते ही, शीघ्र सिंह सम्मुख आकर।
बड़ी नम्रता से प्रणाम कर, बोली कुछ समीप जाकर ॥
"महाराज, जब से दासी ने बीमारी की बात सुनी।
जहां कहीं सुन पाया मैंने कोई वैद-हकीम गुणी ॥
वहाँ गई मैं दौड़ी-दौड़ी, दवा पूछने को स्वामी।
आखिर मिला आज मुझको इक बूढ़ा वैद्य बड़ा नामी।
उसने मुझको एक दवा बतलाई है अकसीर।
जिसे लगाते ही हजूर की, भाग जाएगी पीर ॥

(४)

पर उसके कहने में मेरी जीभ रुकी-सी जाती है।
क्योंकि उसे लाने में स्वामिन्, जान मित्र की जाती है।"
यह सुन जो दरबारी थे, वे स्वामि-भक्ति दिखलाने को।
कहने लगे लोमड़ी से, आग्रह कर दवा बताने को ॥
"अजी लोमड़ी जी, हकीम जी ने जो दवा बताई हो।
शीघ्र कहो हम तो लाएँगे, चाहे जो कठिनाई हो ॥
जान एक की क्या दस की भी जाए तो क्या सोच।
स्वामी के हित प्राण-दान में हमें नहीं संकोच।"

(५)

देख समय अनुकूल लोमड़ी यों बोली चतुराई से।
"पाँव आपका अच्छा होगा केवल एक दवाई से ॥
लेप भेड़िये के गुर्दे का उसने मुझे बताया है।
जिसके कहने में मेरा जी, अब लौं यों सकुचाया है ॥"
इतना सुनते ही दो चीते, ड्योढ़ी पर जो रहे खड़े।
देख भेड़िया पास उसी का गुर्दा लेने टूट पड़े ॥
पलक मारते में कर डाला, उसका काम तमाम।
सत्य कहा है—"जैसे को तैसा फल देते राम ॥"

★